This question paper contains 2 printed pages. **Your Roll No. ....**

Sl. No. of Ques. Paper	**: 8174**	**GC**
Unique Paper Code	**: 52051316**	
Name of Paper	**: Hindi 'B'**	
Name of Course	**: B. Com. (Prog.) Hindi B**	
Semester	**: III**	
Duration	**: 3 hours**	
Maximum Marks	**: 75**	

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिये गये निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिये।)

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिन्दी गद्य के विकास पर प्रकाश डालिये।

अथवा

'निबंध' की परिभाषा देते हुए इसका सामान्य परिचय दीजिए। 12

2. लहनासिंह के उदात्त प्रेम-भाव तथा आत्म-त्याग को रेखांकित करते हुए 'उसने कहा था' कहानी के आधार पर उसका चरित्र-चित्रण कीजिए।

अथवा

बूढ़ी काकी की मूल संवेदना पर विचार कीजिए। 12

3. 'सदाचार का ताबीज' भ्रष्ट राजनीतिक-सामाजिक व्यवस्था पर करारी चोट करता है— विवेचना कीजिए।

अथवा

'मेले का ऊँट' निबंध का सार लिखिए। 12

4. 'अंधेर नगरी' नाटक वर्तमान समय पर टिप्पणी करता है— विवेचना कीजिए।

अथवा

'बिबिया' महादेवी वर्मा का संस्मरणात्मक रेखाचित्र है— स्पष्ट कीजिए। 12

5. किसी **एक** पर टिप्पणी लिखिए:

'हिन्दी साहित्य का आधुनिक युग गद्यकाल है।'

अथवा

जीवनी तथा आत्मकथा का सामान्य परिचय। 7

6. व्याख्या कीजिए:

(क) रूपा का हृदय सन्न हो गया। किसी गाय की गरदन पर छुरी चलते देखकर जो अवस्था उसकी होती, वही उस समय उसकी हुई। एक ब्राह्मणी दूसरों की झूठी पत्तल टटोले इससे अधिक शोकमय दृश्य असंभव था। पूड़ियों के कुछ ग्रासों के लिए उसकी चचेरी सास ऐसा निकृष्ट कर्म कर रही है। यह वह दृश्य था जिसे देखकर देखने वालों के हृदय काँप उठते हैं। ऐसा प्रतीत होता मानो जमीन रुक गई, आसमान चक्कर खा रहा है। संसार पर कोई आपत्ति आने वाली है। रूपा को क्रोध न आया। शोक के सम्मुख क्रोध कहाँ? करुणा और भय से उसकी आँखें भर आईं। इस अधर्म का भागी कौन है?

P. T. O.

अथवा

लहनासिंह हँसकर बोला, "क्यों, लपटन साहब? मिजाज कैसा है? आज मैंने बहुत बातें सीखीं। यह सीखा कि सिख सिगरेट पीते हैं। यह सीखा कि जगाधरी के जिले में नीलगाएँ होतीं हैं और उनके दो फुट चार इंच के सींग होते हैं। यह सीखा कि मुसलमान खानसामा मूर्तियों पर जल चढ़ाते हैं और लपटन साहब खोते पर चढ़ते हैं। पर यह तो कहो, ऐसी साफ उर्दू कहाँ से सीख आए? हमारे लपटन साहब तो बिना 'डैम' के पाँच लफ़्ज भी नहीं बोला करते थे।"

(ख) ईसा की अट्ठारहवीं शताब्दी के अंतिम भाग में वही काशी नहीं रह गई थी, जिसमें उपनिषद् के अजातशत्रु की परिषद् में ब्रह्मविद्या सीखने के लिये विद्वान ब्रह्मचारी आते थे। गौतम बुद्ध और शंकराचार्य के धर्म-दर्शन के वाद-विवाद, कई शताब्दियों से लगातार मंदिरों और मठों के ध्वंस और तपस्वियों के वध के कारण प्राय: बंद से हो गए थे। यहाँ तक कि पवित्रता और छुआछूत में कट्टर वैष्णव धर्म भी उस विशृंखलता में, नवागन्तुक धर्मोन्माद में अपनी असफलता देखकर काशी में अघोर रूप धारण कर रहा था।

अथवा

दूसरे की दुर्बलता के प्रति मनुष्य का ऐसा स्वाभाविक आकर्षण है कि वह सच्चरित्र की त्रुटियों के लिए दुश्चरित्र को भी प्रमाण मान लेता है। चोर ईमानदारी का उपयोग नहीं जानता, झूठ सत्य के प्रयोग से अनभिज्ञ रहता है। किसी गुण से अनभिज्ञ या उसके संबंध में अनास्थावान मनुष्य यदि उस विशेषता से युक्त व्यक्ति का विश्वास न करे, तो स्वाभाविक ही है, पर उसकी भ्रांत धारणा भी प्राय: समाज में प्रमाण मान ली जाती है, क्योंकि मनुष्य किसी को दोषरहित नहीं स्वीकार करना चाहता और दोषों के अधक अन्वेषक दोषयुक्तों की श्रेणी में ही मिलते हैं। 10×2